Appendix

परिशिष्ट

- :: परिशिष्ट :: -

१ वर दे वीणा वादिनी वर दे ।

प्रिय स्वतन्त्र - रव अमृत मन्त्र नव

भारत में भर दे ।

काट अन्ध - उर के बन्धन स्तर

बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,

कलुष-भेद तम - हर प्रकाश भर

जगमग जग कर दे ।

नव गति, नव लय, ताल छन्द नव,

नवल कण्ठ नव जलद-मंद्र रव

नव नभ के नव विहग वृन्द को

नव पर नव स्वर दे ।

(गीतिका)

२ सखि, वसन्त आया ।

भरा हर्ष वन के मन,

नवोत्कर्ष छाया ।

किसलय-वसना, नववय लतिका

मिली मधुर प्रिय - उर तरु-पतिका,

मधुप वृन्द बन्दी -

पिक स्वर नभ सरसाया ।

लता-मुकुल-हार-गन्ध-भार भर
बही पवन बन्द मन्द मन्दतर
जागी नयनों में वन -
यौवन की माया।

आवृत सरसी उर सरसिज उठे,
केशर के केश कली के छूटे,
स्वर्ण-शस्य-अंचल
पृथ्वी का लहराया।

(गीतिका)

३ झूम झूम मृदु गरज गरज घन घोर
राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर।

झर झर झर निर्झर - गिरि - सर में,
घर, मरु, तरु-मर्मर, सागर में,
सरित-तड़ित गति-चकित पवन में
मन में, विजन-गहन - कानन में,
आनन आनन में, रव घोर कठोर
राग अमर! अम्बर में भर निज रोर!

अरे वर्ष के हर्ष!
बरस तू बरस - बरस रस धार!
पार ले चल तू मुझको,
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन भैरव संसार!
उथल पुथल कर हृदय -
मचा हलचल, चल रे चल
मेरे पागल बादल!

धँसता दलदल, हँसता है नद खल खल
बहता, कहता कुल कुल कलकल कलकल
देख देख नाचता हृदय
बहने को महा विकल-बेकल,
इस मरार से इसी शोर से
सघन घोर गुरु गहन रोर से
मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर।
राग अमर। अम्बर में भर निज रोर।
(परिमल)

४ खून की होली जो खेली,
    युवक जनों की है जान,
पाया है लोगों में मान,
    खून की होली जो खेली।

रंग गये जैसे पलाश,
    कुसुम किंशुक के, सुहाये,
कोकनद के पाये प्राण,
    खून की होली जो खेली।

निकले क्या कोंपल लाल,
    फाग की आग लगी है,
फागुन की टेढ़ी तान,
    खून की होली जो खेली।

खुल गई गीतों की रात,
    किरन उतरी है प्रात की,
हाथ कुसुम-वरदान,
    खून की होली जो खेली।

आई सुवेश बहार,
        आम लीची की मंजरी,
कटहल की अरधान,
        खून की होली जो खेली ।

विकच हुए कचनार,
        हार पड़े अमलतास के,
पाटल - होठों मुसकान,
        खून की होली जो खेली ।
                        (नये पत्ते)

५- जागो फिर एक बार ।
        प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें
अरुण पंख तरुण किरण
        खड़ी खोलती है द्वार -
जागो फिर एक बार -

आँखें अलियों - सी -
        किस मधु की गलियों में फंसी,
बन्द कर पांखें, पी रही है मधु मौन
        या सोई कमल - कोरकों में ?
बन्द हो रहा गुंजार -
        जागो फिर एक बार ।

अस्ताचल ढले रवि,
        शशि - छवि विभावरी में,
चित्रित हुई है देख,
        यामिनी - गन्धा जगी

एकटक चकोर - कोर दर्शन - प्रिय,
आशाओं भरी मौन भाषा बहुभाव मयी
घेर रहा चन्द्र को चाव से,
शिशिर भार - व्याकुल कुल
खुले फूल झुके हुए,
आया कलियों में मधुर
मद उर यौवन उभार
जागो फिर एक बार

पिउ रव पपीहे प्रिय बोल रहे,
सेज पर विरह - विदग्धा वधू
याद कर बीती बातें, रातें मन मिलन की
मूंद रही पलकें चारु
नयन - जल ढल गए,
लघुतर कर व्यथा भार -
जागो फिर एक बार ।
सहृदय समीर जैसे

पोंछो प्रिय, नयन नीर
शयन शिथिल बाहें
भर स्वप्निल आवेश में
आतुर उर वसन मुक्त कर दो
सब सुप्ति सुखोन्माद हो,
छूट छूट अलस
फैल जाने दो पीठ पर
कल्पना से कोमल
ऋजु कुटिल प्रसार - कामी केश गुच्छ

तन मन थक जाँय
        मृदु सुरभि सी समीर में
बुद्धि बुद्धि में हो लीन,
        मन में मन, जी जी में
एक अनुभव बहता रहे
        उभय आत्माओं में,
कब से मैं रही पुकार
जागो फिर एक बार

उगे अरुणाचल में रवि
        आई भारती - रति कवि कण्ठ में,
क्षण क्षण में परिवर्तित
        होते रहे प्रकृति पर,
गया दिन आई रात,
        गई रात, खुला दिन,
ऐसे ही संसार के बीते दिन, पक्ष, मास
        वर्ष कितने ही हजार -
जागो फिर एक बार ।
                (परिमल)

६ अशरण शरण राम
        काम के छवि धाम ।

ऋषि - मुनि - मनोहंस
        रवि - वंश - अवतंस,
कर्मरत निश्शंस
        पूरो मनस्काम ।

जानकी मनोरम,
नायक सुचारुतम,
प्राण के समुद्यम,
धर्म धारण श्याम ।

(आराधना)

७- वरद हुई शारदा जी हमारी ।
पहनी वसन्त की माला संवारी ।

लोक विशोक हुये, आंखों से
उमड़े गगन लाखों पांखों से
कोयलें मंजरी की शाखों से
गाईं सुमंगल होली तुम्हारी ।

नाचे मयूर प्रात के फूटे
पात के मेघ तले, सुख लूटे,
कामिनी के मन मठ से छूटे
मिलने खिलने को ललकी निवारी

(गीतगुंज)

८ भजन कर हरि के चरण मन
पार कर माया वरण मन

कलुष के डर मे गिरे हैं
देह क्रम तेरे फिरे हैं -
विषय के रथ से उतर कर
बन शरण का उपकरण मन

अन्यथा है वन्य कारा
प्रबल पावस, मध्य धारा,
टूटते तन से पछड़कर
उखड़ जायेगा, तरुण मन

(अर्चना)

६ खेलूँगी कभी न होली
उससे जो नहीं हम जोली ।

यह आँख कहीं कुछ बोली,
यह हुई श्याम की तोली,
ऐसी भी रही ठिठोली,
गाढ़े रेशम की चोली

अपने से अपनी धो लो,
अपना घूंघट तुम खोलो
अपनी ही बातें बोलो,
मैं बसी पराई टोली ।

जिनसे होगा कुछ नाता,
उनसे रह लेगा माथा
उनसे हैं जोड़ूं - जाँता,
मैं मोल दूसरे मोली ।

(अर्चना)

१० शुभ्र शरद् आई अम्बर पर
बही रास कमलों की सर सर,

हर सिंगार के फूल प्रात को
बिछे रश्मि से लजी गात, ओ
शीर्ण हो चलीं नदियां, झरने,
बदले वेश जनों ने घर घर ।

शान्त हो चली निशा और कुछ,
रवि की खेती बढ़ी, पौर कुछ
गांव गांव गाठी को काटे
खुश होते हैं बातें कर - कर ।

खंजन देख पड़े, आये हैं,
ढेल, महोख, सवन छाये हैं,
तरुणी की पक्ष्मल आंखों की,
लहराईं छवि सुन्दर-सुन्दर ।
(गीत गुंज)

११ दुःख भी सुख का बन्धु बना
पहले की बदली रचना

परम प्रेयसी आज श्रेयसी,
भीति अचानक गीति गेय की,
हेय हुई जो उपादेय थी,
कठिन, कमल कोमल बचना ।

ऊंचा स्तर नीचे आया है,
तरु के तल फैली छाया है,
ऊपर उपवन फल लाया है,
छल से छुटकर मन अपना ।
(आराधना)

१२ मुसीबत में कटे हैं दिन,
मुसीबत में कटी रातें
लगीं है चाँद - सूरज से
निरन्तर राहु की घातें ।

जो हस्ती से हुये हैं पस्त
समझे हैं वही क्या है,
गुजरती जिन्दगी के साथ
हरकत से भरी बातें ।

कड़ाई से दबी है कोमलता,
यह माजरा, सब है -
झपटने के लिये बलि पर
सिकुड़ती हैं बली आतें ।

सुखों की सोई दुनियां में,
जगी जो वह भी गफ़लत है,
कहां हैं गेह की बातें,
कहाँ है स्नेह की मातें ।

(बेलग)

१३ किनारा वह हमसे किये जा रहे हैं
दिखाने को दर्शन दिये जा रहे हैं ।

जुड़े ये सुहागिन के मोती के दाने
वही सूत तोड़े लिये जा रहे हैं ।

छिपी चोट की बात पूछी तो बोले
निराशा के डोरे सिये जा रहे हैं ।

ज़माने की रफ़्तार में कैसा तूफ़ां
मरे जा रहे हैं, जिये जा रहे हैं ।

खुला भेद, विजयी कहाये हुए जो,
लहू दूसरे का पिये जा रहे हैं।
(बेला)

१४ बुझी दिल की न लगी मेरी,
तो क्या तेरी बात बनी।

चली कोई न चलाई चाल
तो क्या तेरी घात बनी।

भर दी करनी से बुरी जो,
तरी डगमग कर दी,
अपने पूरे बल पार
किनारे न जो तर दी।

बुझी दिल की न लगी मेरी
तो क्या तेरी बात बनी।
(गीतगुंज)

१५ हँसी के तार के होते हैं ये बहार के दिन।
हृदय के हार के होते हैं ये बहार के दिन।

निगाह रुकी कि केशरों की वेशिनी ने कहा,
सुगन्ध भार के होते हैं ये बहार के दिन।

कहीं की बैठी हुई तितली पर जो आँख गई,
कहा, सिंगार के होते हैं ये बहार के दिन।

हवा चली, गले खुशबू लगी कि वे बोले,
समीर सार के होते हैं ये बहार के दिन।

नवीनता की आँखें चार जो हुईं उनसे,
कहा कि प्यार के होते हैं ये बहार के दिन ।
(बेला)

१६ गहन है यह अन्धकारा
स्वार्थ के अब गुंठनों से
हुआ है लुण्ठन हमारा ।

खड़ी है दीवार जड़ की घेर कर,
बोलते हैं लोग ज्यों मुँह फेरकर,
इस गगन में नहीं दिनकर,
नहीं शशधर नहीं तारा ।

कल्पना का ही अपार समुद्र यह,
गरजता है घेर कर तनु, रुद्र यह,
कुछ नहीं आता समझ में,
कहाँ है श्यामल किनारा ।

प्रिय मुझे वह चेतना दो देह की,
याद जिससे रहे वंचित गेह की
खोजता फिरता न पाता हुआ,
मेरा हृदय हारा ।

(अणिमा)
और
अपरा

१७ दलित जन पर करो करुणा
दीनता पर उतर आये
प्रभु, तुम्हारी शक्ति अरुणा ।

हरे तन - मन प्रीति पावन,
मधुर हो मुख मनोभावन,
सहज चितवन पर तरंगित
हो तुम्हारी किरण तरुणा ।

देख वैभव न हो नत सिर,
समुद्धत मन सदा हो स्थिर
पार कर जीवन निरन्तर
रहे बहती भक्ति वरुणा

(अणिमा)
और
अपरा

१८ बहुत दिनों बाद खुला ये आसमान
निकली है धूप, हुआ खुश जहान ।

दिखी दिशाएँ, फलके पेड़
चरने को चले ढोर - गाय - भैंस - भेड़,
खेलने लगे लड़के छेड़ - छेड़ - छेड़
लड़कियाँ घरों को कर भासमान ।
कोई बाजार, कोई बरगद के पेड़ के तले
जाँघिया - लंगोटा ले, संभले,
तगड़े तगड़े सीधे नौजवान ।
पनघट में बड़ी भीड़ हो रही
नहीं ख्याल आज की भीगेगी चूनरी

बातें करती हैं वे सब खड़ी,
चलते हैं नयनों के सधे बान ।

(अनामिका)

१६ बादल, गरजो ।
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ ।
ललित, ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के से पाले,
विद्युत छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले ।
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो :-
बादल, गरजो ।
विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनन्त के घन ।
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो :-
बादल, गरजो ।

(अनामिका)

२० प्राण तुम पावन - सावन गात,
जलज जीवन - यौवन अवदात ।

मृदु बूंदों चितवन की लड़ियां,
केश, मेघ, मुख पलक अंखड़ियां,
प्रमन चारु चिन्तन की घड़ियां,
जल भर भूमि सुजात , प्राण तुम

हरि ज्वार की परियाँ झूमीं
अरहर अब चूमीं तब चूमीं,
उड़द बदल कर फैलीं धूमीं ।
लिये मूँग ने पात, प्राण तुम -

२१ जय तुम्हारी देख भी ली
रूप की गुण की, रसीली ।

वृद्ध हूँ मैं, ऋद्धि की क्या,
साधना की, सिद्धि की क्या,
खिल चुका है फूल मेरा
पंखड़ियाँ हो चलीं ढीलीं ।

चढ़ी थी जो आँख मेरी,
बज रही थी जहाँ भेरी,
वहाँ सिकुड़न पड़ चुकी है -
जीर्ण है वह आज तीली ।

आग सारी फुक चुकी है,
रागिनी वह रुक चुकी है,
स्मरण में है आज जीवन,
मृत्यु की है रेख नीली ।

(सांध्य काकली)

२२ भारति जय विजय करे,
कनक शस्य - कमल धरे ।

लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे ।

मुकुट शुभ्र हिम - तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनिक दिशाएं उदार,
शतमुख - शतरव - मुखरे ।

(गीतिका)

२३ बौरे आम की भौंरे बोले ।
प्रात कि गात पात के तोले ।

सरसाई समीर मधुवन की,
आंखों छवि आई आनन की,
आलस दूर हुआ, मन भाया,
चिड़ियों ने सुख के मुख खोले ।

कैसी ज्योति छांह में छलकी,
दुर्बल ने हद कर दी बल की,
आज के साज भूल गये सब जन,
कल के जीवन जो रस घोले ।

(गीत गुंज)

२४ नयनों का नयनों से बन्धन,
कॉपे थर थर थर थर युग तन ।

सम्मेक-से हिले विटप हँसकर,
चढ़े मंजु खिले सुमन खसकर,
गई विवश आयु बाँध वशकर,
निर्भर लहराया सर - जीवन ।

ज्ञात रश्मि गात चूम रे गई,
बँधी हुई खुली भावना नई,
गई दूर दृष्टि जो सुखाश्रयी,
छिपे वे रहस्य दिखे नूतन ।

समके युग रागानुग मुक्ति रे -
ज्ञान परम, मिले चरम युक्ति से
सुन्दरता के अनुपम उक्ति के
बंधे हुए श्लोकपूर्ण कर चरण ।

(गीतिका)

२५- कैसी बजी बीन ?
सजी मैं दिन - हीन ?

हृदय में कौन जो छेड़ता बांसुरी,
हुई ज्योत्स्नामयी अखिल मायापुरी,
लीन स्वर-सलिल में, मैं बन रही मीन ।

स्पष्ट ध्वनि - आ, घनि चली यामिनी भली,
मन्द-पद आ बन्द, कुंज उर की गली,
मंजु, मधु गुंजरित, कलि दल - समासीन ।

देख, आरक्त पाटल पटल खुल गये,
माधवी के नये खुले गुच्छे नये,
मलिन मन, दिवस निशि, तू क्यों
रही क्षीण !

(गीतिका)

२६ स्वर में छायानट भर दो,
पावन प्राणों को कर दो।

अनियारे दृग चपल उपान्तों
भरी रेणुयें, क्लान्तों प्रान्तों,
खेले खेल उपवन के, शान्तों
सीमाओं को नव वर दो।

आलिंकित बान्धवता आये,
वैभव विपुल पराङ्मुख जाये,
जीवन को यौवन नहलाये,
कोई अविनश्वर सर दो।

(गीत गुंज)

२७ मौन रही हार,
प्रिय पथ पथ पर चलती,
सब कहते शृंगार !

कण कण कर कंकण, प्रिय
किण किण रव किंकिणी,
रणन-रणन नूपुर - उर लाज
लौट रंकिणी,

और मुखर पायल स्वर करें बार बार,
प्रिय पथ पर चलती, सब कहते शृंगार।

शब्द सुना हो, तो अब
लौट कहाँ जाऊँ ?
उन चरणों को छोड़, और
शरण कहाँ पाऊँ ?

बजे सजे उर के इस सुर के सब तार
प्रिय पथ पर चलती, सब कहते शृंगार
(गीतिका)

२८ मन चंचल न करो ।
प्रति पल अँचल में पुलकित कर
केवल हरो - हरो - (मन)

तुम्हें खोजता मैं निर्जन में
भटकूं जब घन जीवन - वन में
भेद गहन तम मनोगगन में
ज्योतिर्मयि, उतरो ।

मुँदे पलक जब निशा - शयन में
लगे प्रबल मन कल्प-वयन में
मिला उसे तुम मोह - स्वपन में
स्वप्न स्वरूप धरो ।

तुम्हीं रहो, मिल जाय जगत सब
एक तत्व में, ज्यों भव - कलरव,
ज्योत्स्नामयि, तम को किरणासव,
पिला, मिला, उर लो ।
(गीतिका)

२६ प्रिय यामिनी जागी ।
अलस पंकज दृग अरुण मुख
तरुण - अनुरागी ।

खुले केश अशेष शोभा भर रहे,
पृष्ठ ग्रीवा - बाहु उर पर तर रहे,
बादलों में घिर उनपर दिनकर रहे,
ज्योति की तन्वी, तड़ित -
द्युति ने क्षमा माँगी ।

हेर उर - पट फेर मुख के बाल
लख चतुर्दिक चली मन्द मराल,
गेह में प्रिय स्नेह की जय माल,
वासना की मुक्ति मुक्ता,
त्याग में तागी ।

(गीतिका)

30 नयनों में हेर प्रिये,
मुझे तुमने ये वचन दिये -

" तुम्हीं हृदय के सिंहासन के
महाराज हो, तन के, मन के,
मेरे मरण और जीवन के
कारण जाम पिये ।

" मेरी वीणा के तारों में,
बँधे हुए हो झंकारों में,
उर के हीरों के हारों में
ज्योति अपार लिये ।

" मेरे तप के तुम्हीं अमर वर,
हृदय कम्प के जलद- मन्द्र स्वर,
मेरी तृष्णा के करुणाकर,
तृप्ति प्रेम - गर है ।

(गीतिका)

३१ तुम्हीं गाती हो अपना गान,
व्यर्थ मैं पाता हूं सम्मान ।

मेरा पतझड़ हरा हृदय हर
पत्रों के मर्मर के मुखकर
तुम्हीं सुनाती हो नूतन स्वर
भर देती हो प्राण ।

मेरा दुख अरण्य, किसलय - दल
ज्वाल, जली काली तुम कोयल,
दैन्य डाल पर बैठी प्रतिपल
सुना रही हो तान ।

भ्रम गोधूलि - धूसरित नभ-तन,
तुम शशि, कला किरण दृग चुम्बन,
ज्ञान तन्तु तुम, जग - अज्ञान मन
शव - शिव शक्ति महान ।

(गीतिका)

३२ आज मन पावन हुआ है,
जेठ में सावन हुआ है ।

अभी तक दृग बन्द थे ये,
खुले उर के छन्द थे ये,
सजल होकर बन्द थे ये,
राम अहिरावण हुआ है ।

कटा था जो पटा रहकर,
फटा था जो सटा रहकर,
छुटा था जो छुटा रहकर,
अचल था चावन हुआ है।

(आराधना)

३३ प्यासे तुमसे भरकर हरसे,
सावन घन प्राणों में बरसे।

उनयी आंखों में श्याम घटा,
विद्युत की नम नई छटा,
फैली हरियाली अटा अटा
अंगों के रंगों के परसे।

अविरत रिमझिम, वीणा द्रिम - द्रिम
प्रति छन रेलती पवन पश्चिम
मृदंग बादन, गति अविकृत्रिम
जी के भीतर से बाहर से ।

(सांध्य काकली)

३४ राम के हुए तो बने काम
सांवरे सारे धन, धान धाम।

पूछा जग ने, वह राम कौन ?
बोली विशुद्धि जो रही मौन,
वह जिसके दून, न ड्योढ़ पौन,
जो वेदों में है सत्य, साम।

वह सूर्यवंश सम्भूत तभी,

जीवन को जय का सूत तभी,

कृष्णार्जुन शारण पूत तभी,

जो चरण विचारण बिना दाम ।

(आराधना)

३५ दुखता रहता है अब जीवन,

पतझड़ का जैसा बन उपवन ।

झर झर कर जितने पत्र नवल

कर गये रिक्त तनु का तरुण्डल,

है चिन्ह शेष केवल सम्बल

जिनसे लहराया था कानन ।

डालियाँ बहुत सी सूख गईं

उनकी न पत्रता हुई नई,

आधे से ज्यादा घटा विटप

बीज को चला है ज्यों दाण दाण ।

यह वायु बसन्ती आई है

कोयल कुछ दाण कुछ गाई है,

स्वर में क्या भरी बुढाई है,

दोनों ढलते जाते उन्मन ।

(आराधना)

३६ मुझे स्नेह क्या मिल न सकेगा ?

स्तब्ध, दग्ध मेरे मरु का तरु

क्या करुणाकर खिल न सकेगा ।

जग के दूषित बीज नष्ट कर,
        पुलक स्पंद भर, खिला स्पष्टतर,
कृपा समीरण बहने पर क्या
        कठिन हृदय यह हिल न सकेगा ?

मेरे दुःख का भार, झुक रहा,
        इसीलिए प्रति चरण रुक रहा,
स्पर्श तुम्हारा मिलने पर, क्या
        महाभार यह मिल न सकेगा।

(गीतिका)

३७ बाँधो न नाव इस ठाँव, बन्धु।
        पूछेगा सारा गाँव, बन्धु।

यह घाट वही जिस पर हँसकर,
        वह कभी नहाती थी धँसकर,
आँखें रह जाती थीं फँसकर,
        कँपते थे दोनों पाँव, बन्धु।

वह हँसी बहुत कुछ कहती थी,
        फिर भी अपने में रहती थी,
सबकी सुनती थी, सहती थी,
        देती थी सबके दाँव, बन्धु

(अर्चना)

३८ विपदा हरण हार हरि हे करो पार ।

प्रणव से जो कुछ चराचर तुम्हीं सार ।

तुम्हीं अविनाशी विश्व व्योम के देश,

परिमित अपरिमाण में तुम हुए शेष,

सृष्टि में दृश्य रस रूप भोजन - वेश,

फैलकर सिमटकर तुम्हीं हो निर्धार ।

बहुविध तुम्हारा उपाख्यान गाया

फिर भी कहा अन्त अब भी न पाया,

मूर्त हो या स्फूर्त तुम कुछ न आया,

पदों पर दण्ड प्रणाम के सम्भार ।

(आराधना)

३६ स्नेह की रागिनी बजी,

देह की सुर-बहार पर ।

वर विलासिनी सजी -

प्रिय के अङ्गहार पर ।

नयन हो गये हैं वे,

अयन जिनका खो गया,

सुख के शयन के लिये,

आये हैं असि की धार पर ।

ओस से धुल गई कली,

रवि की आंख खुल गई,

तरुण मूर्छना जगी,

विश्व के तार - तार पर ।

(बेला)

४० मार दी तुझे पिचकारी,
कौन री, रंगी छवि वारी

फूल सी देह - द्युति सारी,
हल्की तूल सी संवारी,
रेणुओं - मली सुकुमारी,
कौन री, रंगी छवि वारी ?

मुसका दी, आभा ला दी,
उर उर में गूँज उठा दी,
फिर रही लाज की मारी,
मौन री रंगी छवि प्यारी ।

(गीतिका)

—